भारत वर्षोन्नति

डॉ0 मिथिलेश त्रिपाठी

असि. प्रोफेसर हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर म0 वि0 पट्टी, प्रतापगढ

इस विशाल वसुधा–तल पर 'भारत' एक समृध्दि–सम्पन्न, सत्य–सनातन एवं सौम्य, सहृदय राष्ट्र के रूप में अनादि काल से प्रतिष्ठित है। इसकी धरती को देवभूमि, इसके निवासियों को देव मानव, इसकी भाषा को देव वाणी, लिपि को ब्राह्मी–देवनागरी, ब्रह्मज्ञ सन्त–महात्माओं को भूसुर, विश्व–मात्र को बर्बर पशुता के विरूद्ध सभ्य–संस्कारित जीवन दशा का पाठ पढाने वाले मनीषियों को जगद्गुरू की संज्ञा से संज्ञायित किया जाना यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि भारत समस्त प्रकार की भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति–सम्पदा से सम्पन्न राष्ट्र के रूप में सदा से विश्व–विश्रुत रहा है। इस दिव्य देव भूमि को सुदूर अतीत से आज तक प्रकृति का अक्षय वरदान प्राप्त है। इसकी उर्वरा मिट्टी समस्त प्रकार की फसलों, कन्द–मूल–फलों एवं औषधि–वनस्पतियों के प्रभूत उत्पादन के सर्वथा योग्य है। यहाँ की वन्य–सम्पदा, यहाँ की सदानीरा नदियाँ, यहाँ की अपार भू–गर्भ जलराशि, यहाँ की असीम खनिज–सम्पदाएँ, यहाँ कि सामुद्रिक एवं पर्वतीय वैभव–निधियाँ, यहाँ कि जैव–विविधता, ऋतुभिन्नता और इन सबसे बढकर यहाँ की बौद्धिक–विचारणा एवं आत्मिक चेतना के साथ–साथ सद्भाव–सवेंदना जैसे अनन्त प्राकृतिक उपहारों के कारण भारत पहले भी सर्वधनधनी धनेश था, आज भी है और अनन्त अनागत तक रहेगा भी। ऋषि–मुनियों की तपस्या साधना, सन्त–महात्माओं की उपासना, भावुक–भक्तों की आराधना एवं आचार्य–परम्परा की शोध–शिक्षा–जन्य अनन्त उपलब्धियों नें भारत को प्रत्येक प्रकार से इतना समर्थ बना दिया था कि एक समय वह विकास के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ होकर सम्पूर्ण संसार का नियमन करता था। किन्तु, काल प्रवाह के साथ परिस्थितियाँ बदलीं। अपनी भारतीय जीवन–शैली से भारतवासी ऊबने लगा। उसके सुविधा भोगी स्वेच्छाचारी मन को घर की कामधेनु अनुपयोगी और परायी गर्दभी उपयोगी लगने लगी। भोगवादी विदेशी जीवन–शैली के आकर्षक मायाजाल में जैसे–जैसे भारतवासी उलझता गया, वैसे–वैसे वह अपने मूल जीवन–स्रोत अर्थात् सांस्कृतिक धारा से कटता गया। जब उसके जीवन का मूल जीवन स्रोत सूख गया तो उसकी शक्ति, साहस–क्षमता जाती रही। इस अवसर का लाभ उठाकर विदेशी आक्रान्ताओं नें उस पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस पराभव से भारत की अपूरणीय क्षति हुई। दीर्घ काल तक भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी रहीं।

Scanned with CamScanner

अथक परिश्रम और अपार क्षति के पश्चात् सन् 1947 ई0 में राजनीतिक दृष्टि से खण्डित आजादी तो मिल गयी, किन्तु मानसिक आजादी अब तक प्राप्त नहीं हो सकी। बोल, चाल, रहन, सहन, खान, पान, पठन, पाठन, आचार, विचार, कार्यपद्धति आदि सभी कुछ में पाश्चात्य प्रभाव का वर्चस्व विद्यमान हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत की स्वाधीन चेतना ने अपना चातुर्दिक विकास आरम्भ किया। भौतिक एवं बौद्धिक समृद्धि के साथ–साथ नैतिक मूल्यों की प्रगति का क्रम चलता रहा। 26 जनवरी 1950 ई0 में भारत का संविधान लागू हुआ। इसका निर्माण विश्व के प्रमुख देशों के संविधान के प्रमुख अशों की दृष्टिगत रखते हुए किया गया। प्राचीन भारतीय आचार–ग्रन्थों को न तो मूल में रखा गया, न आधार बनाया गया और न ही इससे कोई सहायता ली गई। केवल नीति निर्देशक तत्वों में नीतिपरक मान्यताओं की झलक मिलती है। काल प्रवाह के साथ–साथ भारतीय सविधांन में संशोधन होते गये। 18 जून 1951 से लेकर 8 सितम्बर 2016 तक इसमें कुल 101 संसोधन हो चुके हैं। इस उदार संविधान के सहारे देश का शासन–प्रशासन सहज गति से अग्रसर है।

जिस प्रकार 1917 की क्रान्ति के बाद रूस और 1945 के परमाणु–विध्वंसन के बाद जापान ने अपने अभिनव जीवन की विकास यात्रा आरम्भ की, उसी प्रकार सन् 1947 की स्वतंत्रता के बाद से भारत ने भी अपने नवजीवन की शुरूवात की। रूस और जापान आदि देशों को अपने विकास के लिए जहाँ अन्य देशों की कच्ची सामग्री पर आश्रित रहना पड़ता है, वहाँ भारत इस दृष्टि से समृद्धतम राष्ट्र है।

जिस प्रकार 1917 की क्रान्ति के बाद रूस और 1945 के परमाणु–विध्वंसन के बाद जापान ने अपने अभिनव जीवन की विकास यात्रा आरम्भ की, उसी प्रकार सन् 1947 की स्वतंत्रता के बाद से भारत ने भी अपने नवजीवन की शुरूवात की। रूस और जापान आदि देशों को अपने विकास के लिए जहाँ अन्य देशों की कच्ची सामग्री पर आश्रित रहना पड़ता है, वहाँ भारत इस दृष्टि से समृद्धतम राष्ट्र है। कष्ट इस बात का है कि हम अपनी भौतिक सम्पदा का उतना और उस गति से सदुपयोग नहीं कर पाये, जितना अपेक्षित था। परिणामतः हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमुखापेक्षी होते गये और समर्थ होते हुए भी विकसित राष्ट्र की श्रेणी से अभी तक बाहर पड़े हुए हैं। यदि देश की युवा प्रतिभा को सम्मानित प्रश्रय दिया गया होता तो उसका विदेश पलायन न होता। तब उसका लाभ हमें मिलता और हम विकास के चरम उत्कर्ष की ओर तेजी से अग्रसर होते। तब हम सामरिक दृष्टि से इतने मजबूत होते कि विश्व का कोई भी देश हमें आँख दिखाने का दुस्साहस न कर पाता। तब आतंकवादी आक्रमणों और तज्जन्य नुकसानों से भारत का प्रगति–पथ समय–समय पर वाधित न होता। देश में नेता समाज को जो सम्मान मिल रहा है, वह प्रतिभा पुरूषों को भी मिलना चाहिए था। स्थित यह है कि किसी मंत्री, नेता, अभिनेता, खिलाड़ी आदि के किसी कार्यक्रम को शासन–प्रशासन और मीडिया तक से इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि

Scanned with CamScanner

जन मानस में उनकी छवि एक सर्वसमर्थ अवतार के रूप में अकिंत हो जाती है। इसके विपरीत कोई विद्वान प्रोफेसर, राष्ट्रीय कवि–लेखक, देशभक्त सैन्य अधिकारी, विख्यात वैज्ञानिक कब कहाँ आया और कब चला गया, इसका पता ही नहीं चल पाता। आकाशवाणी, दूरदर्शन और समाचार पत्र वाले थोड़ी सी चर्चा करके जैसे उनके ऊपर एहसान करते हों। पूरे देश में समय–समय पर इतनी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक, सांस्कृतिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक आदि संगोष्ठियों का आयोजन होता रहता है कि यदि उनका विस्तृत प्रसारण किया जाय तो पूरे देश में विशेष करके युवा मन में ऐसी सकारात्मक सोच विकसित होगी कि वह अपनी ऊर्जा का प्रयोग रचनात्मक कार्यों में स्वतः करने लगेगा। किन्तु मीडिया के पास अपहरण, हत्या, बलात्कार जैसी सनसनीखेज खबरों के अतिरिक्त इन पर प्रमुखता से प्रकाश डालने का अवकास ही नहीं है। ऐकेडमिक स्टाफ कालेजेज में चल रहे उन्मुखीकरण कार्यम्र एवं पुनश्चार्या पाठ्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी मीडिया की दृष्टि में अर्थहीन होते हैं। कहना न होगा कि प्रतिभा कि उपेक्षा, अनादर और पलायन से अब तक भारत की अपूरणीय क्षति हो चुकी है। इतना सब होते हुए भी भारत नें इतनी उन्नति कर ली है कि विश्व मंच पर आज उसका एक सम्मानजनक स्थान है। अब भारत एक सुशिक्षित राष्ट्र हो चला है। शिक्षा के कारण आज पूरे देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। सुखद आश्चर्य तो यह है कि पुरूषों की तुलना में स्त्रियाँ शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक दिखाई दे रही हैं। इससे न केवल देश का सर्वांगीण विकास हुआ है, अपितु पूरी दुनियाँ में भारत का सम्मान भी बढा है। सारा संसार हमें समतामूलक शिक्षित राष्ट्र के रूप में देखने लगा है। महाविद्यालयों–विश्वविद्यालयों तक में जिस तेजी से छात्राओं की संख्या बढ़ रही है, उससे यह लगने लगा है कि निकट भविष्य में ही भारत की मातृ–सत्ता एक बार फिर से लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली की भाँति समूचे पृथ्वी मंडल पर असुरता के विरूद्ध दिव्यता का संस्थापन करेगी। यही नहीं, जैसे–जैसे शोध का क्षेत्र विकसित होता जा रहा है तथा शोध की दृष्टि निष्पक्ष होती जा रही है, वैसे–वैसे प्राचीन भारतीय शिक्षा–संस्कृत की शाश्वत उपादेयता दुनियां के समझ में आने लगी है। पाश्चात्य देशों की की वर्तमान भोगवादी जीवन–शैली जैसे–जैसे अप्रासांगिक होती जा रही है, वैसे–वैसे भारत की नियम–निबद्ध जीवन–पद्धति विश्व के विकसित देशों तक में महत्व पाती रही है। वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में भारत प्रत्येक क्षेत्र में दुनिया को कड़ी टक्कर दे रहा है। भारत की उन्नत तकनीक ने दुनिया में तहलका मचा रखा है। चाहे चिकित्सा विज्ञान हो, चाहे सामरिक उपलब्धियां हों, चाहे आर्थिक विकास हो, चाहे आन्तरिक अनुसंन्धान हो, चाहे श्रेष्ठ निर्माण हो, भारत ने सभी क्षेत्रों में अपनें को विश्व मंच पर आज प्रमुखता से स्थापित कर लिया है। भारत का चिकित्सा विज्ञान प्रगति–पथ पर निरन्तर अग्रसर है। कठिन से कठिन तथा असाध्य समझे जानें वाले रोगों का सहज–सरल उपचार आज भारत के लिए सामान्य बात हो गयी है। चिकित्सा–विज्ञानियों नें विश्व के लिए पहेली बने हुए मस्तिष्क की जटिलतम संरचना को काफी हद तक पढ़ लिया है, अंग प्रत्यारोपण की प्राचीन विधि को पुनर्जीवित कर लिया है,

Scanned with CamScanner

गुण सूत्रों एवं गुणगुटिकाओं में वांछित परिवर्तन करने की विद्या प्राप्त कर ली है। पोलियों, चेचक जैसी घातक महामारियों पर विजय प्राप्त कर ली है, तथा शरीर के समस्त अंग–प्रत्यंगों की सूक्ष्मतम संरचना तक को समझ कर काल से टकराने की क्षमता अर्जित कर ली है। विकसित देशों तक के चिकित्सक भारत की समुन्नत सर्जरी विद्या की सराहना करते हैं, और किसी जटिल समस्या में उलझ जाने पर भारतीय चिकित्सकों से परामर्श लेते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी प्रखर प्रज्ञा द्वारा भारत को सामरिक दृष्टि से इतना सक्षम बना दिया है कि अब वह आत्म रक्षा के लिए किसी देश पर आश्रित नहीं रह गया है। सन् 1962 के चीन युद्ध में जहां भारत के पास हथियारों का आकाल था, वहीं आज उन्नत किस्म के हथियारों का समृद्ध भंडार है। आज भारत के पास स्वदेश निर्मित परमाणु बम–वाही मिसाइलें हैं, अभेद तोप टैंक हैं, आत्याधुनिक युद्धक विमान हैं, विमान भेदी अनेक प्रकार के अत्युत्तम अस्त्र हैं। सामरिक दृष्टि से श्रेष्ठ जहाजी–बेड़े और पनडुब्बिया हैं। भूतल, सागर, आकाश, वनांचल, पर्वत आदि किसी भी स्थान पर किसी भी परिस्थित में किसी भी प्रकार के युद्ध लड़ने एवं व्यूह–रचना को ध्वस्त करने में भारतीय सेना का कोई जोड़ नही हैं। विशेष पद्धति की युद्ध–कला से अवगत होने के लिए अमेंरिका जैसा सर्वशक्तिमान देश भारत के साथ संयुक्त युद्धाभ्यास कर रहा है। सामरिक शक्ति की उत्कृष्टता एवं आत्म निर्भरता ने भारत को विकसित देशों के निकट लाकर खड़ा कर दिया है। भारतीय अर्थव्यवस्था का अनवरत विकास देखकर विश्व के सारे देश चकित हैं। जब दुनियाँ आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रही थी, तब भारत इस प्रभाव से अछूता था। अपनी विकसित अर्थव्यवस्था के कारण आज भारत उस स्थिति में आ गया है कि वह बराबरी का व्यापारिक समझौता कर सके। भारतीय उद्योग जगत दिन प्रतिदिन अपनी स्थिति को सुदृढ़ करता जा रहा है। भारत के गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की पूरे विश्व में मांग है। जब से भारत नें अपने भौतिक संसाधनों का स्वतः सदुपयोग करने लगा तब से उसकी पराश्रयिता में आशातीत कमी आई है। भारत के आविष्कार विश्व के श्रेष्ठतम आविष्कारों की आज टक्कर लेनें लगे हैं। अन्य देशों के आविष्कार जहां एक बार प्रयुक्त हो जाने के बाद प्रयोग–बाह्य हो जाते हैं, वहां भारतीय आविष्कार थोड़ी सी मरम्मत के बाद बार–बार प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं। भारत की जनसंख्या के अनुसार यहां उपभोक्ताओं की संख्या बहुत अधिक है। विदेशी वस्तुओं को श्रेष्ठ समझने की भारतीय मनोवृत्ति के कारण विश्व के देश भारत को अपना सबसे बड़ा बाजार समझते हैं। इन सब कारणों से भारत आज विश्व–मंच पर एक

भारतीय कूटनीति के परिणाम स्वरूप उसका अकारण शत्रु पाकिस्तान आज विश्व मंच पर अलग–थलग पड़ गया है। इतना सब होते हुए भी आज भारत के विकास के मार्ग में बहुत बड़ी–बड़ी बहुत सी आन्तरिक बाधाएँ हैं। इन पर विजय प्राप्त किए बिना भारत की विकास–यात्रा निर्विध्न रूप से अग्रसर नहीं हो पाएगी।

Scanned with CamScanner

सम्मान जनक स्थान बना चुका है। सागर और भू–तल के साथ–साथ आन्तरिक्ष में भी अप्रत्याशित प्रगति के लिए दुनिया ने भारतीय शक्ति–सामर्थ्य का लोहा मान लिया है।

आज विश्व की विश्वसनीय वायु सेवाओं में भारतीय वायु सेवा अधिक सुरक्षित, अधिक सुखद और अधिक भरोसेमंद मानी जा रही है। भारत द्वारा समय–समय पर भेजे गये आन्तरिक्ष–यान भारत और विश्व के बहुउद्देश्यीय कर्यों में सहयोग कर रहे हैं। धरती पर घटित होने वाली पल–पल की गतिविधियों की सचित्र–सूचना प्राप्त करने की क्षमता भारत ने अपने अन्तरिक्ष अभियान के द्वारा अर्जित कर ली है। जो काम पहले गणित ज्योतिष द्वारा किया जाता था, आज वह बहुत कुछ आन्तरिक्ष–यान द्वारा सम्भव हो गया है। धरती के किसी भी कोने में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं की पूर्व सूचना आज एक सामान्य बात हो गयी है। इसीलिए किसी भी आकस्मिक आपदा में जान माल की अब उतनी क्षति नहीं होती, जितनी की उसकी सम्भावना होती थी। भारत के अन्तर्ग्रहीय यान आज चन्द्रमां और मंगल की कक्षा तक पहुँच चुके हैं। ग्रहान्तर जीवन की खोज की अति महात्वकांक्षी योजना पर भारत ने कार्य आरम्भ कर दिया है। इससे वर्तमान विश्व मंच पर भारत की साख बढ़ी है। आज आन्तरिक्ष–युद्ध लड़ने की क्षमता वाले देशों में भारत भी सम्मिलित हो सकता है। आन्तरिक्ष के क्षेत्र में आज भारत का विकास इतनी तेजी से हो रहा है कि निकट भविष्य में उसका विश्व–विकास में अग्रणी स्थान होगा। स्वतंत्रता–प्रप्ति के बाद से भारत ने इतनी तेजी से अपना बहुमुखी विकास किया है कि आज उसकी गणना विश्व के गिने–चुने देशों में होने लगी है। इस प्रगति का परिणाम है कि आज भारत के पास वह सब कुछ है, जिसके बल पर वह किसी देश से अधिक नहीं तो कम भी नहीं है। एक समय था जब विश्व के विकसित देश हमें पराश्रित समझ कर कोई भी समझौता रद्द करने में कोई संकोच और भय अनुभव नहीं करते थे। माननीय श्री नरसिंह राव जी के प्रधानमंत्रित्व–काल में अमेरिका के दबाव में रूस नें बड़ी आसानी से क्रायोजोनिक सौदा रद्द कर दिया था। माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी के कार्य–काल में हुए परमाणु–परीक्षण के विरोध में अमेरिका आदि देशों ने भारत पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। उन्होंने भारत को जितना हल्का समझा था उतना वह था वहीं। भारत ने स्वदेशी तकनीक से क्रायोजोनिक इंजन भी तैयार कर लिया और समस्त प्रतिबन्धों को प्रभावहीन बना दिया था। रूस के उस कदम से भारत को बड़ी ठेस लगी थी। वह सतर्क हुआ और अमेरिका से उसकी निकटता बढने लगी। इसी बीच एशिया महाद्वीप में चीन की बढती हुई ताकत ने विश्वसमुदाय को अपनी ओर खींचा। अमेरिका के एकाधिकार एवं निरंकुशता का सामना करने के लिए रूस, चीन एवं भारत को मिलाकर महासंघ बनाने की बात रूस एवं चीन की ओर से उठने लगी। इससे अमेरिका का चिन्तित होना स्वाभाविक था। उसने जैसे–जैसे भारत से निकटता बढानी शुरू की वैसे–वैसे पाकिस्तान चीन की ओर झुकता गया। इसी बीच आतंकवाद बहुत बड़ी शक्ति के रूप में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो गया। कुछ राज्य उसे चोरी–छिपे उसे शिक्षित–प्रशिक्षित कर रहे थे। पाकिस्तान एक ऐसा ही राष्ट्र है। आतंकवाद और आतंकवादी राष्ट्रों पर काबू पाने के

Scanned with CamScanner

लिए भारत और अमेरिका को एक दूसरे की बेहद आवश्यकता थी। आज दोनों एक दूसरे के बहुत निकट हैं। इस निकटता को चीन की अनियन्त्रित विस्तारवादी नीति पर अंकुश के रूप में देखा जा रहा है। अमेंरिका के प्रत्यक्ष–परोक्ष एवं मुखर–मौन समर्थन न केवल भारत का उत्साह बढा है, बल्कि विश्व–मंच पर उसे विकासित देशों जैसी प्रतिष्ठा भी मिली है। भारतीय कूटनीति के परिणाम स्वरूप उसका अकारण शत्रु पाकिस्तान आज विश्व मंच पर अलग–थलग पड़ गया है। इतना सब होते हुए भी आज भारत के विकास के मार्ग में बहुत बड़ी–बड़ी बहुत सी आन्तरिक बाधाएँ हैं। इन पर विजय प्राप्त किए बिना भारत की विकास–यात्रा निर्विध्न रूप से अग्रसर नहीं हो पाएगी।

Scanned with CamScanner